

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

شرح

# منازل السائرين

خواجہ

عبداللہ انصاری

محمد نیکنام عربشاہی

چاپ دوم با تجدید نظر و اضافات





|                         |                                                                           |
|-------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| سرشناسه                 | : نیکام عربشاهی، محمد، ۱۳۴۷ -                                             |
| عنوان قراردادی          | : منازل السائرین، فارسی - عربی، شرح                                       |
| عنوان و نام پدیدآور     | : شرح منازل السائرین خواجه عبدالله انصاری / محمد نیکام عربشاهی.           |
| وضعیت ویراست            | : [ویراست ۲].                                                             |
| مشخصات نشر              | : تبریز: گل همیشه بهار، ۱۴۰۲.                                             |
| مشخصات ظاهری            | : ۲۳۶ ص.                                                                  |
| شابک                    | : ۹۷۸-۶۲۲-۵۸۳۶-۵۹-۴                                                       |
| وضعیت فهرست نویسی       | : قیفا                                                                    |
| یادداشت                 | : کتاب حاضر شرحی بر کتاب "منازل السائرین" تألیف خواجه عبدالله انصاری است. |
| یادداشت                 | : چاپ دوم.                                                                |
| یادداشت                 | : کتابنامه: ص. ۲۳۲ - ۲۳۶.                                                 |
| موضوع                   | : انصاری، عبدالله بن محمد، ۳۹۶-۴۸۱ ق.، منازل السائرین - نقد و تفسیر       |
| موضوع                   | : عرفان - متون قدیمی تا قرن ۱۲                                            |
|                         | : Mysticism - Early works to 20th century                                 |
|                         | : تصوف - متون قدیمی تا قرن ۱۲                                             |
|                         | : Sufism - Early works to 20th century                                    |
| شناسه افزودن            | : انصاری، عبدالله بن محمد، ۳۹۶-۴۸۱ ق.، منازل السائرین، شرح                |
| رده بندی کنگره          | : BP218/6                                                                 |
| رده بندی دیویی          | : ۲۹۷/۸۲                                                                  |
| شماره کتابشناسی ملی     | : ۱۳۳۶۰۳۱                                                                 |
| اطلاعات رکورد کتابشناسی | : قیفا                                                                    |

نام کتاب: شرح منازل السائرین  
نویسنده: محمد نیکام عربشاهی  
انتشارات: گل همیشه بهار  
نوبت چاپ: چاپ دوم / تبریز ۱۴۰۲ نوبت اول برای ناشر  
با تجدید نظر و اضافات  
تیراژ: ۵۰۰ جلد  
قطع: وزیری  
صفحه: ۲۳۶  
قیمت: ۳۵۰ هزار تومان

شابک: ۹۷۸-۶۲۲-۵۸۳۶-۵۹-۴

# فهرست

|    |                                                               |
|----|---------------------------------------------------------------|
| ۷  | پیش گفتار                                                     |
| ۸  | عرفان چیست؟                                                   |
| ۹  | اصطلاحات و اثرات عرفان                                        |
| ۱۰ | عارف کیست؟                                                    |
| ۱۱ | انواع عرفان                                                   |
| ۱۲ | مهم ترین کتاب های علم عرفان عملی                              |
| ۱۶ | ویژگی های منازل السائرین                                      |
| ۱۸ | تذکرات لایم و ضروری در پاره عرفان مورد توجه در منازل السائرین |
| ۲۰ | توصیه های مهم                                                 |
| ۲۱ | مقدمه مؤلف                                                    |
| ۳۷ | (۱) قِسْمُ الْبِدَايَاتِ                                      |
| ۳۹ | (۱) باب الْيَقَظَةِ                                           |
| ۴۳ | (۲) باب التَّوْبَةِ                                           |
| ۴۸ | (۳) باب الْمُحَاسِبَةِ                                        |
| ۵۱ | (۴) باب الْإِنَابَةِ                                          |
| ۵۳ | (۵) باب التَّفَكُّرِ                                          |
| ۵۷ | (۶) باب التَّذَكُّرِ                                          |
| ۶۰ | (۷) باب الْإِعْتَصَامِ                                        |
| ۶۳ | (۸) باب الْفِرَارِ                                            |
| ۶۵ | (۹) باب الرِّيَاضَةِ                                          |
| ۶۸ | (۱۰) باب السَّمَاعِ                                           |
| ۷۱ | (۲) قِسْمُ الْأَبْوَابِ                                       |
| ۷۳ | (۱۱) باب الْحُزَنِ                                            |
| ۷۷ | (۱۲) باب الْخَوْفِ                                            |
| ۸۰ | (۱۳) باب الْإِسْفَاقِ                                         |
| ۸۲ | (۱۴) باب الْخُشُوعِ                                           |
| ۸۴ | (۱۵) باب الْإِخْبَاتِ                                         |
| ۸۶ | (۱۶) باب الزُّهْدِ                                            |
| ۸۹ | (۱۷) باب الْوَرَعِ                                            |
| ۹۲ | (۱۸) باب التَّيَبُّلِ                                         |
| ۹۴ | (۱۹) باب الرَّجَاءِ                                           |
| ۹۷ | (۲۰) باب الرِّغْبَةِ                                          |

(٣) قِسْمُ الْمُعَامَلَاتِ ..... ٩٩

- ١٠١ ..... (٢١) باب الرِّعَايَةِ  
 ١٠٣ ..... (٢٢) باب المُرَاقِبَةِ  
 ١٠٦ ..... (٢٣) باب الخُزْمَةِ  
 ١٠٨ ..... (٢٤) باب الإِخْلَاصِ  
 ١١٠ ..... (٢٥) باب التَّهْذِيبِ  
 ١١٤ ..... (٢٦) باب الإِسْتِقَامَةِ  
 ١١٦ ..... (٢٧) باب التَّوَكُّلِ  
 ١١٩ ..... (٢٨) باب التَّقْوِيضِ  
 ١٢٢ ..... (٢٩) باب الثِّقَةِ  
 ١٢٥ ..... (٣٠) باب التَّسْلِيمِ

(٤) قِسْمُ الْأَخْلَاقِ ..... ١٢٧

- ١٢٩ ..... (٣١) باب الصَّبْرِ  
 ١٣٣ ..... (٣٢) باب الرِّضَا  
 ١٣٧ ..... (٣٣) باب الشُّكْرِ  
 ١٤٠ ..... (٣٤) باب الحَيَاءِ  
 ١٤٢ ..... (٣٥) باب الصِّدْقِ  
 ١٤٦ ..... (٣٦) باب الْإِيثَارِ  
 ١٤٩ ..... (٣٧) باب الْخُلُقِ  
 ١٥٢ ..... (٣٨) باب التَّوَاضُعِ  
 ١٥٥ ..... (٣٩) باب الْقُوَّةِ  
 ١٥٧ ..... (٤٠) ابْتِسَاطٌ

(٥) قِسْمُ الْأَصُولِ ..... ١٥٩

- ١٦١ ..... (٤١) باب الْقَصْدِ  
 ١٦٣ ..... (٤٢) باب الْعَزْمِ  
 ١٦٥ ..... (٤٣) باب الْإِرَادَةِ  
 ١٦٧ ..... (٤٤) باب الْأَدَبِ  
 ١٦٩ ..... (٤٥) باب الْيَقِينِ  
 ١٧٢ ..... (٤٦) باب الْأَتَسِ  
 ١٧٥ ..... (٤٧) باب الذِّكْرِ  
 ١٧٧ ..... (٤٨) باب الْفَقْرِ  
 ١٨٠ ..... (٤٩) باب الْغِنَى  
 ١٨٢ ..... (٥٠) باب مَقَامِ الْمُرَادِ

(٦) قِسْمُ الْأَوْدِيَةِ ..... ١٨٧

|     |                    |
|-----|--------------------|
| ١٨٩ | (٥١) باب الإحسان   |
| ١٩٣ | (٥٢) باب العلم     |
| ١٩٦ | (٥٣) باب الحكمة    |
| ١٩٨ | (٥٤) باب البصيرة   |
| ٢٠١ | (٥٥) باب الفراسة   |
| ٢٠٥ | (٥٦) باب التعظيم   |
| ٢٠٧ | (٥٧) باب الإلهام   |
| ٢٠٩ | (٥٨) باب السكينة   |
| ٢١٥ | (٥٩) باب الطمأنينة |
| ٢١٨ | (٦٠) باب الهمة     |

(٧) قِسْمُ الْأَحْوَالِ ..... ٢٢١

|     |                  |
|-----|------------------|
| ٢٢٣ | (٦١) باب المحبة  |
| ٢٢٦ | (٦٢) باب الفيرة  |
| ٢٢٨ | (٦٣) باب الشوق   |
| ٢٣١ | (٦٤) باب القلق   |
| ٢٣٣ | (٦٥) باب العطش   |
| ٢٣٥ | (٦٦) باب الوجد   |
| ٢٣٧ | (٦٧) باب الدهش   |
| ٢٣٩ | (٦٨) باب الهممان |
| ٢٤١ | (٦٩) باب البرق   |
| ٢٤٤ | (٧٠) باب الذوق   |

(٨) قِسْمُ الْوَلَايَاتِ ..... ٢٤٧

|     |                 |
|-----|-----------------|
| ٢٤٩ | (٧١) باب اللحظ  |
| ٢٥٣ | (٧٢) باب الوقت  |
| ٢٥٧ | (٧٣) باب الصفا  |
| ٢٥٩ | (٧٤) باب السرور |
| ٢٦١ | (٧٥) باب السر   |
| ٢٦٤ | (٧٦) باب النفس  |
| ٢٦٧ | (٧٧) باب الغربة |
| ٢٧١ | (٧٨) تباب الغرق |
| ٢٧٣ | (٧٩) باب الغيبة |
| ٢٧٥ | (٨٠) باب التمكن |

(٩) قِسْمُ الْحَقَائِقِ ..... ٢٧٧

|     |                              |
|-----|------------------------------|
| ٢٧٩ | ..... باب المُكَاشِفَةِ (٨١) |
| ٢٨١ | ..... باب المُشَاهِدَةِ (٨٢) |
| ٢٨٣ | ..... باب المُعَايَنَةِ (٨٣) |
| ٢٨٥ | ..... باب الْحَيَاةِ (٨٤)    |
| ٢٨٨ | ..... باب الْقُبْضِ (٨٥)     |
| ٢٩٠ | ..... باب الْبَسْطِ (٨٦)     |
| ٢٩٢ | ..... باب السُّكْرِ (٨٧)     |
| ٢٩٤ | ..... باب الصُّحُو (٨٨)      |
| ٢٩٦ | ..... باب الْإِتِّصَالِ (٨٩) |
| ٢٩٩ | ..... باب الْإِتِّفَاعِ (٩٠) |

(١٠) قِسْمُ النَّهَايَاتِ ..... ٣٠١

|     |                              |
|-----|------------------------------|
| ٣٠٣ | ..... باب الْمَعْرِفَةِ (٩١) |
| ٣٠٨ | ..... باب الْفَنَاءِ (٩٢)    |
| ٣١١ | ..... باب الْبَقَاءِ (٩٣)    |
| ٣١٣ | ..... باب التَّحْقِيقِ (٩٤)  |
| ٣١٥ | ..... باب التَّلْيِيسِ (٩٥)  |
| ٣١٨ | ..... باب الْوُجُودِ (٩٦)    |
| ٣٢٠ | ..... باب التَّجْرِيدِ (٩٧)  |
| ٣٢٢ | ..... باب التَّفْرِيدِ (٩٨)  |
| ٣٢٥ | ..... باب الْجَمْعِ (٩٩)     |
| ٣٢٧ | ..... باب التَّوْحِيدِ (١٠٠) |

..... ٣٣٣ كِتَابِنَامَهُ

## پیشگفتار

سالیانی است که در خدمت عده‌ای از عرفان پژوهان و دوستداران عرفان نظری و عملی هستیم که در این ایام (از سال ۱۳۹۰-۱۴۰۲ ه‍.ش) کتاب‌های انسان در عرف عرفان و عیون مسائل النفس علامه حسن‌زاده آملی، فصوص‌الحکم ابن عربی، مقامات‌العارفین ابن سینا، رساله لب‌اللباب و رساله الولایه علامه طباطبایی و منازل‌السائرین خواجه عبدالله انصاری و شرح حدیث طینت تدریس شد. در ضمن مباحثه یادداشت‌هایی درباره کتب مذکور داشتیم که به تدریج به زیور طبع آراسته شدند، مخصوصاً سنگینی و پیچیدگی‌هایی که کتاب وزین منازل‌السائرین داشت کار انتقال و یادگیری را بر فراگیران علم عرفان عملی سخت می‌کرد، با این که این کتاب از زمان نگارش، در موضوع خود مورد توجه محققان بوده و جزء کتب درسی می‌باشد و شروح زیادی نیز به زبان عربی و فارسی بر آن نوشته شده است، ولی به جهت عمق مطالب آن، گویا تمام زوایای آن باز نشده و یا به زبان روز درنیامده است، هر چند اساتید فن در این زمینه سعی وافر نموده و زحمات زیادی کشیده‌اند و گام‌های زیادی برداشته‌اند.

ما نیز در ضمن مباحثه و تدریس سعی در ترجمه روان و شرحی آسان و گشودن بعضی از زوایای پنهان آن داشتیم که در حد وسع و توان و بضاعت اندک علمی بر آن پرداختیم تا به صورت آسان و روان در اختیار شیفتگان علم عرفان عملی قرار گیرد و مورد استفاده جویندگان این راه باشد و ما را نیز از دعای خیر خود فراموش نکنند.

و هذا من فضل ربی  
محمد نیک‌نام عربشاهی

۱۴۰۲/۸/۳۰

هفتم جمادی الاولی ۱۴۴۵

مصادف با روز حکمت و لطف

تبریز